शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

मीडिया की भाषा- दशा और दिशा

डॉ.वन्दना अग्निहोत्री
विभागाध्यक्ष हिन्दी
माता जीजाबाई शासकीय.स्नातकोत्तर.कन्या.महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मीडिया अर्थात् माध्यम मुद्रित माध्यम। चाहे वह पत्र-पत्रिकाएं हों या विद्युतीय माध्यम - रेडियो दूरदर्शन इन सबके लिए एक अलग प्रकार की भाषा की आवश्यकता होती है। इन माध्यमों का सीधा सम्बन्ध सामान्य जनता से लेकर विशिष्ट तरह के लोगों से होता है। अतः यहाँ प्रयुक्त होने वाली भाषा रोजमर्रा प्रयोग की होनी चाहिए, चाहे समाचारों की भाषा हो, उदघोषणा की भाषा हो, संपादकीय हो, धारावाहिकों की भाषा हो या समाचार वाचन की भाषा हो या चर्चा परिचर्चा की भाषा हो। इसमें साहित्यिक या संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए। इन माध्यमों में लोकप्रचलित भाषा का प्रयोग होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

" समाचार की भाषा तकनीकी विषयों की भांति निश्चित नही होती। संवाददाताओं का शैक्षणिक तथा मानसिक स्तर भी भिन्न-भिन्न होता है। अतः समाचार में पर्याप्त वैविध्य देखने को मिलता है। इसी भाँति समाचार पत्र के पाठको के स्तर में भी काफी विभिन्नता होती है। अतः समाचार की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि समाचार पत्र को औसत पाठक उसे समझ सके। 1". समाचार की भाषा सरल, स्पष्ट और आकर्षक होनी चाहिए समाचार लिखते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि समाचार केवल बुद्धिजीवियों के लिए नही, बल्कि एक आम आदमी के लिए लिखा जा रहा है। जो बहुत परिमार्जित भाषा नही समझता। डॉ.प्रीता व्यास कहती हैं आम आदमी भी समझ सके इसलिए उसकी बोलचाल की भाषा को अपनाना चाहिए। एक सीमा तक समाचार पत्र पाठकों के लिए भाषा शिक्षक का भी कार्य करता है। इस लिए उन्हें भाषा के प्रति लापरवाही नहीं अपनानी चाहिए।

भाषा की उपयोगिता

समाचार लेखन और उद्घोषणा दोनों का उद्देश्य पाठक के साथ सरल ढंग से भावो का संचार करना है। इसके लिए एक विशेष प्रकार का लेखन करना जरूरी होता है। भाषा इतनी आसान हो कि सामान्य व्यक्ति भी आसानी से समझ जाये। उसे शब्दकोष की सहायता न लेनी पडे। वाक्य रचना व्यवस्थित हो, उन शब्दो का प्रयोग हो जिनसे पाठक का परिचय हो और अर्थ निकालने में पाठक को सुविधा हो। सम्पादकीय समाचार पत्र की आत्मा होती है, उसकी रीति-नीति का दर्पण होती है" जिसके पार से समाचार पत्र की आवाज ही मुखर नही होती, अपितु युग चेतना की अनुगूंज भी सुनाई देती है।" वस्तुतः

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय समाचार-पत्र के लिए फिल्म की 'रील या कम्प्यूटर की फ्लापी है, जिससे समाचार पत्र की कैन्द्रीय 'थीम या वस्तु' उतरती है। इसलिए सफल संपादकीय लेखन के लिए आवश्यक है कि उसका ढांचा छोटा हो, भाषा सरल हो, सहज हो, जिसे सामान्य पाठक भी सरलता से व्यक्त भाव को ग्रहण कर सके, अन्यथा भाषा की जटिलता पाठकों में अरूचि उत्पन्न कर सकती है।'' किन्तु सरल ढंग से लिखने का अर्थ यह नहीं होता कि लेख बेजान हो जाए।

समाचार का शीर्षक पूरे समाचार का दर्पण होता है ''उपयुक्त, सरल, और शीर्षक, अपने चार छः अक्षरों में ही समाचार के सारे भाव उसकी ध्वनि , उसकी महत्ता और उसके तमाम आधार और वातावरण को भी क्षणमात्र में झलका देता है। एक श्रेष्ठ शीर्षक स्वयं में पूर्ण माना जाता है शीर्षक की भाषा सूत्रात्मक शैली में सजीव व संक्षिप्त होनी चाहिए, क्योंकि समयाभाव के कारण कुछ लोग केवल शीर्षक ही पढ़ पाते हैं। शीर्षक में कठिन नामकरण न हो,तथा दार्शनिक शव्दावली का प्रयोग नही होना चाहिए। शीर्षक की भाषा समाचार के अनुकूल हो, उसमें द्विअर्थक शब्दावली का कतई प्रयोग नहीं हो।

इलेक्ट्रानिक मीडिया के अंतर्गत रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म, इंटरनेट, आदि आते हैं। रेडियो से समाचार सुने जा सकते हैं, जबकि टेलीविजन के समाचार देखे व सुने जाते हैं। पूरी घटना का विवरण दर्शक सुनने के साथ प्रत्यक्षर्शा भी होता है। अतः दूरदर्शन एवं रेड़ियो पर प्रसारित होने वाली भाषा और उन्हें पढ़ने की तकनीक अलग होती है।

मनोरंजन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध सजग करने का कार्य रेड़ियो और दूरदर्शन करते हैं। अतः इनमें प्रसारित होने वाले समाचारों की भाषा सर्वसहज और लोक की रूचि के अनुसार होनी चाहिए। उसे जटिल समस्याओं का विवेचन करने वाली भाषा होनी चाहिए। रेड़ियो श्रृव्य माध्यम है, इसके समाचारों की भाषा सरल वाक्य छोटे, नये-तुले, संतुलित होने चाहिए। क्लिष्ट उबाऊ अप्रचलित मुश्किल से अर्थ निकालने वाली भाषा का प्रयोग नही होना चाहिए।

दूरदर्शन पर प्रस्तुत होने वाले समाचारो की भाषा मिली जुली या खिचड़ी है। इसने हिन्दी के मूल स्वरूप के ढाँचे को ध्वस्त कर दिया है। अतः दूरदर्शन को भी चाहिए कि अपनी बात अपने सभी कार्यक्रम दर्शकों तक आसानी से पहुँचाने के लिए समाचार प्रस्तुति या अन्य कार्यक्रमों में आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करे। कठिन शब्दावली से दूर रहे। आँचलिक शब्दावली का प्रयोग यदि आँचलिक कार्यक्रमों करे तो वह भी उपयुक्त होगा।

रेडियो एवं दूरदर्शन के समाचार वाचकों को व्याकरण का बोध होना चहिए। शब्दों का उच्चारण मोहक होना चहिए। दमदार आवाज़,स्वरों का उतार-चढव, स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण कुशल वाचक के लिए प्रथम शर्त है। उद्घोषक की सजगताओं पर पुष्पा मिश्रा ने कहा है यह एक प्रकार का चुनौतीपूर्ण कार्य है। कभी-कभी अंतिम समय में उद्घोषणा में परिवर्तन करना पड़ता है। विषय वस्तु पर पैनी निगाह रखनी पड़ती है और हर स्थिति में आत्म नियंत्रण रखते हुए अपना कार्य स्वाभाविक ढंग से करना होता है। अनुभव के साथ उद्घोषणा कार्य में निखार आता है। एक अच्छे उद्घोषक को चहिए कि वह किसी स्थापित उद्घोषक की कॉपी न करे, बल्कि स्वयं की शैली का विकसित करे। यदि

उसका भाषा पर नियंत्रण होगा तभी वह अपनी शैली का विकास कर सकेगा। रेडियो और दूरदर्शन पर विभिन्न कार्यक्रम चैबीसों घन्टे चलते रहते है। इनमें नाटक, प्रहसन, कहानी, संगीत, फिल्म, कथाए, कामिक्स आदि के साथ ही शिक्षा, स्वास्थ, अंधविश्वास, सामाजिक, पारिवारिक एवं ऐतिहासिकता से सम्बन्धित कथ्यों की जमीन पर नाटकों धारावाहिकों की सर्जना होती है। इन धारावाहिकों का सीधा असर महिलाओं और बच्चों पर होता है। भाषा के द्वारा कथानक को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। अतः धारावाहिकों की भाषा ऐसी होनी चाहिए, जिसे महिलाएं और बच्चे आसानी से समझ सकें। दैनिक जीवन से सम्बध रखनेवाली भाषा ज्यादा असरदार होगी। टेलीविजन धारावाहिकों की भाषा आम बोलचाल या कामकाज की भाषा होनी चाहिए।" कुछ लोग इसके लिए मिली जुली या खिचड़ी भाषा के नाम पर एक नई भाषिक संरचना को जन्मना चाहते हैं। लेकिन ऐसा करना ठीक नहीं है, क्योकि तमाम दावो के बाद रेडियो और दूरदर्शन का बहुत बड़ा गँवई श्रोता निपट और ठेढ देसी भाषा ही समझता है। शहर के निचले कुनवे की भी वही स्थिति है। परिचर्चा और प्रश्नोत्तर की भाषा भी सरल और असरकारक होनी चाहिए। सरल,सहज और सन्तुलित आवाज में होनेवाली परिचर्चा और प्रश्नोत्तर देर तक श्रोताओं और दर्शक पर असर करते हैं।

रेडियो एवं दूरदर्शन में सीधे प्रसारण के लिए संतुलित स्वर के साथ स्पष्ट और बोधगम्य भाषा की भी आवश्यकता होती है। डॉ.एन.सी.पंत रेडियो पर प्रसारित होने वाले प्रसारणों की भाषा के विषय में लिखते है कि, " रेडियो समाचार के प्रसारणों की भाषा सरल, सुबोध, सुगम एवं आकर्षक शैली युक्त होना चाहिए।" 7 दूरदर्शन के प्रसारणों की भाषा के सम्बन्ध में डॉ.सविता चड्ढा ने लिखा है "टेलीविजन के लिए समाचार लिखते समय एक तो भाषा के लिखित तथा मुद्रित रूप को उच्चरित रूप देना होता है और दूसरे उसे चित्र तथा फिल्म की मांग के अनुसार लिखना होता है। चित्र अपने आप बोलता है।" 8 एक अच्छा समाचार संपादक कम शब्दों में अधिक जानकारी देता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया की भाषा सामान्य बोलचाल की हो, वाक्य छोटे-छोटे एवं रोचक हों। जटिलता का अभाव ही अंगरेजी के प्रचलित शब्दों कापी, पेन, स्कूल, बस आदि के साथ ही अन्य भाषाओं के शब्दों को सहजता से अपनाया जाना चाहिए। अप्रचलित कठिन शब्दों से बचने का प्रयास हो एवं भाषा में रोचकता हो, तभी सभी स्तरों व वर्गो के लोग उसे समझ सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1.समाचार लेखन के सिद्धान्त और तकनीक डॉ. संजीव भानावत पृ. 38

2.पत्रकारिता परिचय-विश्लेषण डॉ. प्रीता व्यास- पृ. 101

3.संपादनकला एवं प्रूफ पठन-डॉ. हरिमोहन पृ 90

4.पत्र और पत्रकार श्री कमलापति त्रिपाठी पुरूषोत्तम दास टंडन पृ. 143

5.हिन्दुस्तान रेडियो उद्घोषणा मे कैरियर की संभावनाएं उमेशचन्द्र पाठक का लेख वाराणासी संस्करण मार्च-2005

6.प्रयोजन मूल्य हिन्दी की नई भूमिका- कैलाश नाथ पाण्डेय पृ 334

7.हिन्दी पत्रकारिता का विकास- डॉ. एन. सी. पंत-264

8.हिन्दी पत्रकारिता सिद्धान्त और स्वरूप डॉ.सावित्री चड्ढा पृ. 82